ईश्वर प्राप्ति का साधन

(सत्यसंदेश मार्च/अप्रैल, क-भ्त्र में प्रकाशित दूसरा प्रवचन)

सब समाजों के यह भाई आप के दरमियान आये और अपने अपने लफ़्ज़ नुक्ताए-ज़्याल को वाजेह करते रहे। महापुरुष दुनिया में आये और जिस लैवल पर वे काम कर रहे थे, कर के चले गये। हमारे दिल में सब के लिए इज़्ज़त है। इस वक्त हमारे सामने मज़मून यह था कि self-realisation या ईश्वर प्राप्ति कैसे हो ? Ethical life या objective side के तरीकों और सब से प्यार और दया भाव के मुतल्लिक, जो परमार्थ के लिए ज़मीन की तैयारी है, वे उस का बयान करते रहे या महापुरुषों के जीवन के मुतल्लिक ज़िक्र कर गये।

मुअज़्मा (पहेली) तो हमारे सामने यही है कि ज़्या परमात्मा है ? भई इस के दो जवाब मिलते हैं महापुरुषों की बाणी में। मुझे शुरु से शौक़ था महापुरुषों की बाणी पढ़ने का, मुसलमान फकीरों की बाणी पढ़ने के लिए मैंने मुनशी फाज़िल की तैयारी की। गुरबाणी तो घर की थी, मेरा कायदा यह था कि एक एक शज़्द पढ़ लेना और उस को लिख लेना, भई आज का सबक यह मिला है, फिर उस पर विचार करना। हम लोग दो चार दस बीस सफे पढ़ लेते हैं, भई पढ़ना और अच्छा मगर उस पर पूरी तरह विचार करना, उस का तात्पर्य यह है कि समझना चाहिए। तो मैं एक शज़्द लिख लेता और फिर उस पर विचार करता। वहां बार बार इस बात की याद दहानी थी कि परमात्मा है, महापुरुषों ने उसे पाया है। किसी ऐसे महापुरुष की सोहबत करो जिस ने उसे पाया है इस के साथ साथ कुछ और ज़्यान भी मिलता था। सिर्फ गुरबाणी ही में नहीं और और महापुरुषों की बाणी में भी कि किसी ने उस को देखा नहीं। Nobody has seen God in this life बड़े मुतज़ाद (विरोधी) ऐसे बयानात मालूम होते हैं मगर हैं सही। परमात्मा जो absolute God है और अदृष्ट है, जो into being अभी नहीं आया, अपने आप में कायम बिलज़ात है उस का नाम Absolute God है। उस को अशज़्द कर के बयान किया है। वेद भी यही कहते हैं अशज़्दं, जब वह into being आया उस को शज़्द कर के बयान किया। जो Absolute God था, अशज़्द हालत में उस को अनाम भी कहा है। जब वह into being आया शज़्द हालत में तो उस को नाम कहा:-

बनामे ओ कि ओ नामे नदारद

कहते हैं उस को जिस का कोई नाम नहीं, ये नाम तो ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने रखे हैं हमारे समझाने के लिए, उस ज़ाते हक को दर्शाने के लिए, लोगों को at home कराने के लिए कि कुछ है। हर एक महापुरुष जो आया, उस ने अपनी अपनी जगह अनेकों नाम उस के दर्शाए। हमारे दिल में सब नामों के लिए इज़्ज़त है, जिस नाम से भी प्यार से उस उसको याद करो, वह दर्शन देता है। यही दशम गुरु साहब ने फरमाया:-

नमस्तं अनामं

हमारी नमस्कार है उस को जिस का कोई नाम नहीं, तो वह जो वह परमात्मा है न वह तो भई किसी ने देखा न सुना। वह तो लय होने का मुकाम है। यह बात भी सही है। जब वह into being (होने में) आया 'एको बहु श्याम' कि मैं एक से अनेक हो जाऊं:-

एको कवाओ तिस ते होए लज़्ख दरयाओ।

जब वह into being आया तो उस का नाम नाम हुआ। उस नाम की तारीफ

कई नामों से की गई। किसी ने उसे राम कहा कि वह रम रहा है, किसी ने वाहेगुरु कहा, किसी ने विषञ्भर, किसी ने अल्लाह, किसी ने परमात्मा कहा, दशम गुरु साहब मस्ती में आये तो अनेकों नामों का इज़हार जाप साहब में किया। ऐसे बारह चौदह सौ नाम जाप साहब में आये हैं जो पहले किसी ग्रंथ पोथी में नहीं आये। हमारे दिल में सब नामों के लिए प्यार है जब तक वे इस हकीकत का बोध कराते हैं। इस लिए गुरबाणी में कहा है:-

बलिहार जाऊं जेते तेरे नाओं हैं।

अरे भई हकीकत के इज़हार के लिए लज़्ज़ बरते हैं। वे सब नाम हम को प्यारे हैं मगर साथ ही साथ यह भी कहा कि

कौन नाम जग जां के सिमरे पावे पद निरबाना॥

वह कौन नाम है जिस के सिमरण से हमें निर्वाण पद की प्राप्ति हो सकती है ? निर्वाण पद, त्रिगुणातीत अवस्था को कहते हैं। जितने भी नाम हैं वे सब तीनों गुणों में हैं। आर्य समाजी भाई कहते हैं कि हमारा नाम सब से ऊंचा है जाप के लिए, इस से उधार होगा। भई अक्षरी नाम ठीक हैं मगर अक्षरी नाम जिस का बोध कराते हैं उस से न लगे तो शांति कैसे होगी ? पानी है इसे वाटर कहो, आब कहो, जल कहो, aqua कहो या माओ कहो, ये अक्षरी नाम हैं हर एक ज़बान में पानी के। अक्षरी नामों के खाली उच्चारण करने से प्यास नहीं बुझेगी, इस से रुचि होगी, शौक़ बनेगा, उधर तवज्जो लगेगी कि हां कोई चीज़ ऐसी है जिस के पीने से प्यास बुझ सकती है। जब तक जिस का अक्षर बोध करते हैं वह चीज़ liquid (तरल) है, वह चीज़ हमें न मिले, प्यास नहीं बुझती।

इस्म ज़्वानी रौ मुसज़्मा राबजो
बे मुस्समा इस्म के बाशद निको

तुम नाम ले रहे हो, जाओ नाम को पकड़ो। बगैर नाम के अक्षरी नाम तुज़्हें ज़्या फायदा दे सकते हैं ? इन की भी ज़रूरत है, हर चीज़ की value (कीमत) है। सिमरण या जप से हम ने शुरु होना है, किसी न किसी नाम से, इस का भी कारण है, इस की ज़रूरत ज़्या है ? हमारे दिल दिमाग़ में दुनिया बस गई है। कैसे ? दुनिया का सिमरण कर कर के। अब ऐसी हालत को दिल से निकालना है तो प्रभु के सिमरण से काटो इसे। लोहे को लोहे से काटो। इस लिए सिमरण की ज़रूरत है। जप कहो, सिमरण कहो, यह है elementary step, पहला कदम है, इस के भी अनेकों फायदे हैं। गुरु अर्जुन साहब ने एक पूरी अष्टपदी इस पर कही है, फरमाया:-

सिमरो, सिमर सिमर सुख पाओ॥
कल कलेष तन माहिं मिटाओ॥
सिमरो जाप विसंभर एकै॥
नाम जपत अगणत अनेकै॥

फिर सारी महिमा ज़्यान करते हुए कि सिमरण में ज़्या ज़्या फायदे हैं, आखिर फरमाते हैं:-

हर सिमरण में अनहद झंकार॥

अनहद की झंकार बजती है वहां वह अखंड कीर्तन, वह sound principle, music of the spheres जिस का Plato (अज़्लातून) ने ज़्यान किया है, जब उस का contact (संबंध) मिलता है सिमरण की यकसूई (एकाग्रता) करने से, रूह के सिमट जाने से उस का contact मिलता है।

तेरे द्वारे धुन सहज की माथे मेरे दगाई॥

उस में ध्वनि है:-

राम नाम कीर्तन रत्न वथ हर साधु पास रखीजे॥

रमे नाम में कीर्तन है, sound principle है, एक ही राग है, उस की हीरे

जवाहारात की कुंजी हरि ने साधु के पास रखी है। जहां जहां गुरबाणी में कीर्तन का ज़िक्र आया है, वहां साथ साथ साधु का भी ज़िक्र आया है।

साध संग हर कीर्तन गाईये

साधु के संग में हरि कीर्तन गाओ। बाहरी कीर्तन elemntary steps (आरंभिक कदम) हैं, इन से फायदा उठा लो मगर जिस कीर्तन से आत्मा मन के नीचे से आज़ाद होती है, जन्म जन्म की सोई अवस्था से जाग उठती है वह अखंड कीर्तन है जो घट घट में हो रहा है। इस के मुतल्लक गुरु साहब ने फरमाया:-

अखंड कीर्तन तिन भोजन चूरा॥
कहो नानक जांके सत्गुर पूरा॥

और **हर कीरत साध संगत है सिर कर्मण के कर्मा॥**

साधु के संग में जो हरि कीर्तन मिलता है वह सब कर्मों से ऊंचा है। वह कब मिलता है ?

जिन पुरव जन्म का लहणा॥

तो इस नाम में ध्वनि है, अखंड कीर्तन है, इलाही राग है। Socrates (सुकरात) ने ज़िक्र किया है, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जो मुझे एक नई दुनिया में ले गई। उस को वेदों ने श्रुति कहा, नाद कहा, वह अनाद है, नाद हुआ, नाद से चौदह भवन बने। मुसलमान फकीरों ने उसे कलमा कहा, कलमे से चौदह तबक़ बने । अक्षर तो न रहा। ला इल्लाह इल्ललाह ये अक्षर हैं उस ताकत का बोध कराने के लिए जो, नहीं है सिवाय अल्लाह के और कुछ। उस की तारीफ नाम कर के की है।

नाम के धारे खंड ब्रह्मंड॥

नाम वह ताकत है जो खंडों ब्रह्मंडों को धारण किए हुए है। उस नाम को ध्याने से जीव का कल्याण है। जप जी साहब में जहां सारा उपदेश खत्म हुआ है तो गुरु नानक साहब ने फरमाया:-

जिन्नी नाम ध्याया गये मशक्कत घाल॥
नानक ते मुख ऊजले केती छुट्टी नाल॥

जिन्होंने नाम को ध्याया है उन की मनुष्य जीवन की मुशक्कत सफल हो गई। उन के अपने मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गये और उन के साथ अनेकों जीवों का उद्धार हो गया। यह नाम की महिमा है, नाम की महिमा। इसे गुरबाणी में बड़े तरीके से ज़्यान किया है। फरमाते हैं:-

नानक कागद लज्ख मणां पढ़ पढ़ कीजै भाओ॥
मस्सी तोट न आवही लेखे पवण चलाओ॥

लाखों मन कागज़ भक्ति भाव से पढ़ जाओ। सारी दुनिया की धर्म पुस्तकें शायद हज़ार मन से ज्यादा नहीं होंगी। इसी पर बस कर दो ? कहते हैं नहीं, कुछ और भी कहते हैं कि सियाही की कमी न हो और हवा की तरह और भक्ति भाव से लिखते चले जाओ।

तो भी कीमत ना पवे हौं केवड आखां नाओं॥

नाम अक्षर नहीं है भई। God into expression power (परमात्मा की प्रज्ट ताकत) का नाम है जो खंडों, ब्रह्मंडों को बनाने वाली है। उस नाम के ध्याने से जीवों का कल्याण है। अक्षरी नाम उस का बोध कराने के लिए हैं, इन से हम ने चलना है। हमारे दिल में इन सब के लिए इज्ज़त है।

धर्म पुस्तकों में महापुरुषों के, अनुभवी पुरुषों के जो कलाम हैं उन के पढ़ने से हमारे दिल में रुचि पैदा होती है मगर वे भी किसी intellectual (बुद्धि के पहलवान) पुरुष से सुनेंगे तो समझ नहीं आयेगी। अभी सरदार साहब फरमा रहे थे कि अंतर intellectual light है, अरे भई intellectual light नहीं, सचमुच लाईट है।

नाम जपत कोट सूर उजेयारा बिनसे भरम अंधेरा॥

गुरु अमरदास जी से पूछा गया कि गुरु ज़्या देता है, फरमाते हैं ?

गुरु ज्ञान अंजन सच नेत्री पाया॥
अंतर चानण, अज्ञान अंधेर गंवाया॥

अंतर प्रकाश हो जाता है जो उस नूर को देखने वाला है अंतर में। दशम गुरु साहब ने कहा वही खालसा है:-

पूर्ण जोत जगे घट में ताहें खालस ताहें नखालस जानो॥

जो पूर्ण ज्योति का देखने वाला है, घट में, जिस के हृदय में प्रकाश हो गया वह खालसा है। ऐसा एक खालसा लाओ हम उस के पांव धोने को तैयार हैं। ऐसे पांच सात मिल जायें ? तो ज़्या कहते हैं ? मुसलमान की भी यही तारीफ की है, जो कोहेतूर पर चढ़ कर खुदा का नूर देखता है उस का नाम मुसलमान है। यह कोहेतूर है (माथे पर), हिन्दू भी उसी का नाम है जो परमात्मा की ज्योति को देज़ता है। क्रिसचन (ईसाई) भी उसी को कहते हैं जो light of God (प्रभु की लाईट) को देखता है। भई सब महात्मा यही कहते हैं। तो वह God into expression power जिस को नाम कहा, इज़हार में आया वहां vibration (हिलोर) हुई तो दो चीज़ें पैदा हुईं, एक light यानी ज्योति दूसरी sound यानी आवाज़, एक ज्योति मार्ग एक श्रुति मार्ग ये दो ही मार्ग हैं। यह सब के घट में है। हमारी हालत ज़्या है ? परमात्मा ने आत्मा देहधारी (इंसान) बनाये। आत्मा की ज़ात वही है जो परमात्मा की ज़ात है। वह चेतन प्रभु, हमारी आत्मा उस की ज़ात का कतरा है। A drop out of the ocean of life है। यह जिस्म जिस्मानियत के घाट में बंधी पड़ी है, मन इंद्रियों का रूप हो रही है। जगत का रूप हो रही है, अपने आप को भूल गई है। अब वह परमात्मा की ज्योति घट घट में है, महापुरुषों ने देखी। गुरु नानक साहब से पूछा गया, परमात्मा है ज़्या ? फरमाया:-

नानक का पातशाह दिस्से जाहिरा॥

वहां कोई दलील नहीं, no reasoning. क्राईस्ट से पूछा गया, उन्होंने भी यही कहा Behold the Lord, देखो, no reasoning. हम तुम से कोई पूछता है तो हम कहते हैं कि मौसम वक्त पर आता है, घड़ी है, उस के बनाने वाला भी कोई है। दुनिया के great mechanism का बनाने वाला भी कोई होना चाहिए। As a matter of inference या ज़्या कहते हैं भई feel करो, महसूस करो कि परमात्मा सब में है। कोई उस का ज्योति बना कर ध्यान करता है, कोई तसवीर रख कर ध्यान करता है, कोई अक्षर बना कर करता है। भई that is your own way (यह आप की अपनी बनावट है)। वह light है कहां ? आप के घट में। आप कहां बस रहे हैं ? आप इंद्रियों के घाट का रूप बने बैठे हो। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते उस का ताल्लुक नहीं मिलता। नाम की तारीफ भी यही की गई है।

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा॥
अत रस मीठा नाम प्यारा॥

वह बाहरी दृष्टि का मज़मून नहीं, वह अंतर्मुख होने से मिलता है, इंद्रियों के घाट से ऊपर आ कर उस का ताल्लुक मिलता है। बड़ा मीठा, बड़ा प्यारा, बड़ा नशा देने वाला है वह नाम।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात॥

मैं ज्यादा detail (विस्तार) में नहीं जाऊंगा, थोड़े लफ़्ज़ों में सब के घट में उस की ज्योति है। उस में sound principle (आवाज़) भी है और ज्योति भी है। हम उस की ज्योति को देख सकते हैं और उस की प्रणव की ध्वनि को सुन सकते हैं। गुरु अमरदास जी ने कहा:-

ऐ नेत्रो मेरेयो हर तुम में जोत धरी
हर बिन अवर न देखो कोई॥
ऐ श्रवणो मेरेयो हर शरीर लाए सुणो सज्ञ बाणी॥

ऐसी बाणी जो हमेशा सत है, बाहरी बाणियां कोई पांच सौ साल से है, कोई डेढ़ हज़ार साल से, कोई पांच हज़ार साल से है। यह बाणी सत बाणी जो है:-

बाणी वज्जी चौह जुगी सच्चो सच सुणाए॥

वह हमेशा से चली आई है। वह बाणी है। वह अनाद है, वह अनाम है, वह शज़्द है। वह into being (हस्ती में) जो आया वह बाणी हुआ, नाद हुआ, शज़्द हुआ। उस में दो चीज़ों का expression, उस के दो phases (पहलू) बनते हैं, एक light (रोशनी) एक sound (आवाज़)। तो दो ही मार्ग हैं। एक ज्योति मार्ग एक श्रुति मार्ग। मुसलमान फकीरों ने उसे कलामे कदीम भी कहा है:-

हैफ दरबंदे जिस्म दर मानी।
नशनवी सौते-पाक रहमानी॥

अफसोस हम जिस्म जिस्मानियत की कैद में फंसे हैं। उस कलामे कदीम को जो आ रहा है हम नहीं सुनते। उन्होंने भी कलमे की यही तारीफ फरमाई:-

ऐ खुदा बिनमा रा आं मुक़ाम।
कंदरो बे हर्फ मी रवेद कलाम॥

ऐ खुदा हमें वह मुकाम बताओ जहां बगैर हर्फों के कलमा उग रहा है।

जहं बोल जहं अज़्सर आवा॥
जहं अबोल तहं मन नहीं धावा॥
बोल अबोल मध्य है सोई॥
जैसा है तस लखे न कोई॥

बड़ी frank opinion (लाधड़क ज़्यान) दी है। सो इस नाम के साथ कौन लग सकता है? कौन देख सकता है? कौन सी आंख है जिस से वह नज़र आता है? गुरु नानक साहब से पूछा गया, फरमाया:-

नानक से अज़्खड़ीयां बेअन्न
जिन दिसंदो मापरी॥

वह आंखें और हैं जिन से वह नज़र आता है। ये तो चमड़े की आंखें हैं यही भगवान कृष्ण ने गुरु की हैसियत में बताया। तुम मुझ को इन चमड़े की आंखों से नहीं देख सकते बल्कि उस दिव्य चक्षु से जो मैंने तुम को दिया है।

वह है तो सही। क्राईस्ट ने भी यही कहा है। St. Mathews कहते हैं If thine eyes be single thy whole being shall be full of light, अगर तुज़्हारी दो से एक आंख बन जाये तुज़्हारा अंतर नूर से भर जाये। अरे भई सारे महापुरुष यही बात कहते हैं। उस में नूर है, उस में कलामे कदीम है मगर हम इस वक्त ज़्या बने पड़े हैं। वह किस के अंतर है, किस के अंतर नहीं? वह सब के अंतर है। हम उस को ज़्यों नहीं पा सकते? इस लिए कि हम मन इंद्रियों का, जगत का रूप बने बैठे हैं और अपने आप को भूल गये हैं। आप अंत समय देखते हैं ज़्या होता है? आत्मा जिस्म से जुदा होती है। नीचे चक्र टूटते हैं, आंखें पलट जाती हैं बस। आखरी रूह का मुकाम तो यही है। एक दिन जिस्म को छोड़ना है। इंद्रियों के घाट से ऊपर आ कर ही नाम का contact (संपर्क) मिल सकता है। उस की ज्योति प्रज़्ट हो सकती है। और तो कोई तरीका नहीं, सब महापुरुष यही कहते हैं। तो इस लिए यह बतलाया कि किसी ऐसी हस्ती से मिलो:-

तू देख उलट कर मन में

स्वामी जी महाराज फरमाते हैं अंतर उलटो। संतों के मार्ग को उलटा मार्ग भी कहते हैं। गुरु अमरदास जी महाराज ने फरमाया :-

सत्गुर मिलिए उलटी भई भाई॥
जीवत मरे तां बूझ पाये॥

जब सत स्वरूप हस्ती मिलती है तो हमारी इंद्रियां उलटने लगती हैं। जीते जी

मरना, जब रूह सिमट कर आंखों के पीछे आ गई तो यह मरना हो गया कि नहीं, यह practical (अनुभव का) मज़मून है। तां बूझ पाये, तो वह हकीकत को समझने वाला बनता है। जब तक हम जिस्म जिस्मानियत का रूप बने बैठे हैं, इंद्रियों के घाट पर बैठे हैं, बाहरी ज़्वाहिशात में ज़लीलो ज़्वार हो (पच) रहे हैं हम हकीकत से दूर रहते हैं। यह हकीकत हम में है। गुरु अमरदास जी स्त्र साल तक तलाश करते रहे, जब गुरु अंगद साहब के चरणों में आये, हकीकत को पाया बड़े प्यार से समझाया है:-

मनवां दह दिस धांवदा
ओह कैसे हर गुण गाए।
इंद्री व्याप रही अधिकाई
काम क्रोध नित सतावें॥

मन को इंद्रियां व्याप रही हैं, यह कभी क्रोध में ज़ेलता है, काम में गिरता है। जो मन इंद्रियों के वश में है उस को प्रभु ज़्या है:-

दस इंद्रे कर राखे बास॥
तां के आत्मे होए प्रकास॥

जो पांच कर्म इंद्रियों और पांच ज्ञान इंद्रियों को वश में करे, उन्हें invert (अंतर्मुख) करे उस के अंतर नूर भर जायेगा। तो वह light (रोशनी) जो है already exist करती (पहले ही) है आप के अंदर मगर जब तक आप इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते, उस को देख नहीं सकते। अब भी है वह ज्योति। गुरु अमरदास जी को जब यह हकीकत मिली तो फरमाते हैं :-

हम नीच ते उज़म भए ज़ाई हर की सरणाई॥
डुज़्बदा पाथर काढ लिया साची वडियाई॥

भाई हम कभी आप की तरह इंद्रियों के घाट पर थे। अब उज़म पदवी को पा गये जब से हरि की शरण आये। फिर कहा है:-

बिख से अमृत भये जब ते गुरमत बुध पाई॥

गुरु की मत मिली, पहले हम माया में ज़हरआलूद (लिबड़े) थे, अब उज़म पदवी को पा चुके हैं। यह बात ज़्यान करने की गर्ज़ ज़्या है ? There is hope for every body, हर एक इंसान के लिए उज़्मीद है। आज एम0 ए0 पास है जो, कभी पहली में पढ़ते थे, जो आज पहली जमात में पढ़ते हैं वे भी एम0 ए0 पास हो सकते हैं बशर्ते कि मुनासिब हिदायत और मदद मिले। महापुरुष यह कभी नहीं कहते कि हम आसमानों से उतरे हैं, वे कहते हैं हम तुज़्हारी तरह इंसान हैं:-

माणस मूरत नानक नाओं।

कि मैं तुज़्हारे जैसा इंसान हूं, नानक मेरा नाम है। हां वे mouthpiece of God बने, उन्होंने अपनी आत्मा को मन इंद्रियों से आज़ाद कर के अपने आप को जाना और प्रभु को पाया।

जैसे में आवे खसम के बाणी
तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो॥

जो आज एक इंसान कर रहा है वह भी बाकायदगी से चले तो वह भी इस हकीकत को पा सकता है। There is way back, बाकायदगी से मगर किन की सोहबत से यह मिलेगा। पहला कदम, हमारे हजूर (हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) एक मिसाल दिया करते थे कि एक मिठाइयां बनाने की किताब है, उस में लिखा है कि लड्डू ऐसे बनता है, जलेबी ऐसे बनती है, कलाकंद ऐसे बनता है। साथ ही यह भी लिखा है कि डाज़्टरी लिहाज़ से खांड की यह तासीर है, घी की यह तासीर है, बड़ी अच्छी तरह दिया है बयान। अब सारा दिन सुबह से शाम तक इस किताब को पढ़ते रहो, तुज़्हारा पेट भर जायेगा, स्वाद आयेगा ? Reasoning is the help and resasoning the bar. हम इस वक्त विचार से काम कर रहे हैं एक नतीजे

पर पहुंचने के लिए लेकिन अनुभव तब चलेगा जब इंद्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो तब आत्मा का साक्षात्कार होगा। बड़ा practical (प्रैज़्टिकल) मज़मून है। जब तक हम इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते, जिसे जीते जी मरना कहते हैं, तब तक हकीकत नहीं खुलती:-

नानक जीवंदेयां मर रहिए ऐसा जोग कमाइए॥

कबीर साहब कहते हैं कितनी बार? फरमाते हैं:-

मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार।
ऐसी मरनी जो मरे दिन में सौ सौ बार॥

जब चाहे तुम जिस्म से ऊपर आ जाओ। भाई मनी सिंह बंद बंद कटा रहा है। गुरु अर्जुन साहब तज़े (गर्म) तवे पर बैठे और बाहोश बैठे। यह सुरत का मार्ग, वह सुरत के पहलवान थे। भाई मनी सिंह ने सुरत को यहां (माथे की तरफ ईशारा कर के) रखा, काट लो भई। यह एक regular science (पक्की साईंस) है भई। आज हम इसे भूल चुके हैं। सब महापुरुषों ने इस पर ज़ोर दिया है। श्री गुरु अमरदास फरमाते हैं:-

मरने ते सब जग डरे जीवेयां लोड़े सब कोए॥
गुरप्रसादी जीवत मरे तां हुकमे बूझे कोए॥

मरने से सब डरते हैं आलिम हो या फाज़िल, अमीर हो या गरीब हर कोई यह चाहता है कि मैं दो घंटे और जी लूं। अगर किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से जीते जी मरने के राज़ को जान जाये, How to rise above the body consciousness, यह समझ ले तो हमेशा की ज़िंदगी को पा जायेगा। Learn to die so that you may begin to live, यह practical (अनुभव का) मज़मून है। जीते जी मरने के लिए तो राज़ को समझ ले तो ज्या होगा? कहते हैं, तां हुज़्मे बूझे कोए। तो वह conscious co worker of the Divine plan हो जायेगा।

नानक हुज़्मे जे बुझे तां हौमै कहे ना कोए॥

वह कहता है वह (प्रभु) करने वाला है मैं नहीं हूं। फिर ज़्या कहते हैं :-

ऐसी मरनी जो मरे तां सद जीवन होए॥

कि ऐसी मरनी जो मरे तो हमेशा के जीवन को पा जायेगा। सब महात्मा यही कहते हैं। यही और महात्माओं ने कहा है। मुझे शौक़ था मुखतलिफ समाजों की किताबें पढ़ने का। बड़े शौक़ से जाता किताबें लेने, तफसीरें (अनुवाद) इस लिए नहीं लीं कि हर एक commentator (टीकाकार) अपनी राय देता है और किताब की original beauty (आधारजूत सुंदरता) को lose (कम) कर देते हैं। Intellectual wrestling (बुद्धि की पहलवानी) से हर एक अपना रंग देता है तो हकीकत गुम हो जाती है। तो फारसी के लिए मैंने मुनशी फाज़िल की तैयारी की समझने के लिए मुसलमान फकीरों का कलाम। इसी तरह और महापुरुषों की बाणियां पढ़ीं। महापुरुषों की बाणियां अगर आप किसी अनुभवी पुरुष से सुनो तो वही कुछ और रंग देंगी ज़्योंकि यह आमिल पुरुषों की बाणियां हैं। तो मैं अर्ज़ कर रहा था कि यह जीते जी मरने का राज़ है यह एक practical (अनुभव का) मज़मून है। अपराविद्या और पराविद्या ये दो विद्याएं हैं। अपराविद्या में पढ़ना लिखना, विचारना, तीर्थ, व्रत, नियम, दान यह सब शामिल हैं। यह जमीन् की तैयारी है, इन से मुक्ति नहीं है। मुक्ति पराविद्या से, आत्म तत्व के बोध से होगी, to know who you are, what you are. उस प्रभु को पाना मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा आदर्श है। किसी भी समाज में रहो, परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये हैं, समाजें तो हम लोगों ने बनाई हैं। इंसान social being है (मिलजुल कर रहने वाला है), इस लिए किसी न किसी समाज में रहना है। किसी भी समाज में रहो उस में रहते हुए उस आदर्श को पाओ जो सब समाजों के सामने है। हर एक समाज के सामने ज़्या आदर्श है? कि हकीकत को पाओ, प्रभु को पाओ, नेक पाक सदाचारी जीवन बनाओ, परमात्मा से प्रेम करो, परमात्मा घट घट वासी है, इस लिए सब से प्रेम करो। जिस से प्रेम करोगे

उस को दुख ज़्यों दोगे ? उस का तो दुख दर्द बांटोगे, यह तो बाहरी पहलू रहा। किसी अनुभवी पुरुष के पास जाओगे तो उस की पहली निशानी यही है:-

सत्गुर ऐसा जाणिए जो सब से लए मिलाए जीओ॥

वह सब को मिला कर बैठता है, वह समाजों का गुरु नहीं, वह जगत गुरु होता है। उस ने हकीकत को पाया है और दूसरों को दे रहा है। आप भी दे सकते हो, ऐसी बात नहीं कि कोई reserved right (पक्का अधिकार) उन का हो गया। जो भी इस अनुभव को पायेगा अगर वह competent (समर्थ) है तो वह भी दे। तो मेरे कहने का मतलब यही है कि हकीकत सब में है और सब महापुरुषों ने इस का ज़िक्र किया है। आज आपने मुखतलिफ महात्ज़ाओं की मज़हबों के लिहाज़ से बातें सुनीं। जैन मत यह कहता है कि हमारी आत्मा उस प्रभु की अंश है, It is a drop of the Ocean of life, बात तो वही है। हम चेतन सुरत हैं मगर defiled by mind and matter. ज़्वाहिशात से defile (मैली) हो चुकी है हमारी आत्मा। अगर हम उस को पाना चाहते हैं तो ज़्या करें, ज़्वाहिशात को कम करो, फैलाव से हटो। यही महात्मा बुद्ध कहता है Be desireless. यही गुरु नानक साहब कहते हैं:-

एह तन माया पाहया प्यारे लीतड़ा लब रंगाये॥
मेरे कंत न भावे चोलड़ा प्यारे ज़्यों धन सेजे जाये॥

आत्मा और परमात्मा कभी जुदा नहीं हुए:-

एका संगत इकत ग्रह बसते मिल बात न करते भाई॥

अफसोस है कि जिस परमात्मा की हम तलाश कर रहे हैं वह हमारे घट घट में है। दोनों भाई आत्मा और परमात्मा इस जिस्म में बस रहे हैं। एक दूसरे को देखना नसीब नहीं, अफसोस नहीं तो और ज़्या होगा ?

एका सेज सुज़ी धन कंता॥

धन सुज़ी पिर सद जागंता॥

एक ही सेज पर आत्मा और परमात्मा दोनों विराजमान हैं। हमारी आत्मा मन इंद्रियों के घाट पर बाहर फैलाव में जा रही है। वह प्रभु इस का इंतज़ार कर रहा है। अगर यह बाहर से हटे तो वह इस के साथ ही है, वह (प्रभु) इस से कभी जुदा नहीं, यह (आत्मा) उस से कभी जुदा नहीं।

तो सब महापुरुषों की तालीम का यही digest (निचोड़) है कि हकीकत तुम में है, अगर तुम बाहर से हटोगे तो अंतर हकीकत तुम में है। अगर तुम बाहर से हटोगे तो अंतर हकीकत को पाओगे। दूसरे बुद्ध मत के बारे में, इस में दो शाखाएं हैं आज जो भाई आये थे (रेवरंड आर्यवंशी), वह शायद महायान बुद्धिज़्म नाम से ताल्लुक नहीं रखते। महायान बुद्धिज़्म जो है वह तो ईश्वर का इकरार करते हैं। एक दफा एक अमेरिकन से बातचीत के दौरान में इस मंत्र का ज़िक्र आया:-

ओम मणि पदमे हू।

यह महायान बुद्ध का मंत्र है जिस के मायने यह हैं कि ओम (प्रभु) मणि की तरह प्रकाशमान है, उस में light (प्रकाश) और बादल की गरज है और sound principle (ध्वनि) है। मुझे दीवाली पर दो लामा मिले थे, उन्होंने उपदेश लिया और तिज़्बत को वापस चले गए, गोविंदानन उन का नाम था। उन्होंने वहां से चिट्ठी लिखी कि आप ने जो तालीम दी है वह हमारे बुद्ध मत में मौजूद है, I have found out (मैंने ढूंढ निकाला है)। तो हकीकत यही है, आप कैसे कह सकते हैं कि आप कुछ नहीं।

एक दफा की बात है, एक बोध साहब आये हजूर के पास ज़्यास में। हजूर ने फरमाया कि एक बोध महात्मा आया हुआ है, लैक्चर दे रहा है, तुम भी जाओ। मैं गया, वह लैक्चर दे रहा था, There is no soul, there is no God. मैं बैठा सुन रहा था। मैंने थोड़ा pinch किया उसे (चुटकी ली)। वह बोला, What is it? यह ज़्या

है ? मैंने कहा, Do you feel? कि तुझ़ें महसूस हुआ ? कहने लगा, हां। मैंने पूछा What is it that feels? वह ज़्या चीज़ है जो महसूस करती है ? भई यह matter (जड़) नहीं है, यह consciousness है (चेतनता) है। अमेरिका में मैं गया। एक scientist (साईंसदान) मेरे पास आये। बड़ी लज़्बी चौड़ी तकरीर की उस ने कि neutrons, electrons (न्यूट्रोन, इलैज़्ट्रोन) हैं, उन की बाकायदा movement (हरकत) होती है। मैंने कहा वह rythmic है या haphazard (कि जो परमाणुओं में हरकत होती है वह किसी कायदे में होती है या बेकायदगी में)। वह कहने लगा कि यह movement (हरकत) है तो rhythemic (कायदे में) है। मैंने कहा फिर कोई चीज़ है जो इस को कंट्रोल कर रही है ? कहने लगा मालूम तो ऐसा ही होता है। मैंने कहा भई देखो what you have found out so far that is only a research in the domain of matter. Religion is a research in the domain of consciousness. कि तुम ने जितनी छानबीन की है यह सब जड़ पदार्थों के बारे में की है, परमार्थ की सारी छानबीन चेतन तत्व के, रूह के बारे में है।

यह सुनकर होश आ गया। चार घंटे discussion (बहस) रही उस से। सब भाइयों का ज़्याल था कि वह अब नहीं आयेगा। दूसरे दिन वह पहला आदमी था जो आया और उस ने उपदेश लिया, and he got it और उस को तजरबा हुआ।

तो मेरा अर्ज़ करने का मतलब यह है कि हकीकत तुम में है, तुम चेतन स्वरूप हो। अगर self-analysis सीख जाओ, यह जान लो कि how to rise above body consciouness, जिस्म से ऊपर कैसे आ सकते हैं तो तुम खुद जान लोगे कि you are not body, तुम जिस्म नहीं हो। अब तो intellectually (बुद्धि के आधार पर) कहते हो कि मैं जिस्म नहीं, मैं मन नहीं, मैं बुद्धि नहीं, मैं प्राण नहीं। उस वक्त तो आप देखेंगे, then you will see. हम लोग जो आज प्रभु का विचार कर रहे हैं या देख रहे हैं ज्यादातर feelings (भावनाओं) में हैं। परमात्मा सब जगह परिपूर्ण है। यह feel (महसूस) करो और intellectual wrestling (बुद्धि विचार से) किसी inference (नतीजे) पर पहुंचते हैं और नतीजे अख़्ज़ करते हैं तो they are all subject to error. Seeing is above all. इन सब चीज़ों में गलती का इमकान है। अपनी आंखों की शहादत (गवाही) सब से अच्छी है।

महात्मा बुद्ध ने जो ज़्यान किया है कि जब तक तुम खुद न देखो न ग्रंथों पर एतबार करो scriptures पर, न किसी और पर। भई ठीक है, don't believe. अगर न believe करोगे तो conviction (यकीन) कब आयेगी ? जब अपनी आंखों से देखोगे, संतों की तालीम बड़ी आज़ाद है। वह ज़्या कहते हैं ?

जब लग न देखूं अपनी नैनी॥
तब लग ना पतीजूं गुर की बैनी॥

जब तक इंसान अपनी आंखों से न देख ले उस को यकीन नहीं आता। धर्म पुस्तकें पढ़ता है, लैक्चर सुनता है, महात्माओं के मुंह से सुनता है कि अंतर परमात्मा की ज्योति है, फिर कहते हैं कहां है ? कैसे हो सकता है यह ? जब देख लेता है तो कहता है ठीक है। तालीम हर एक महापुरुष की रही है। महात्मा बुद्ध के पास दो भाई गये, एक थे आस्तिक, एक थे नास्तिक। नास्तिक ने कहा कि परमात्मा है ? आस्तिक ने कहा कि हां है, वह God है, नेक है, वह दया है, वह chastity, पवित्रता है। नास्तिक ने कहा कि वह जो कुछ है, उस पर अमल करो, खुद बखुद हकीकत को पा जाओगे, ethical life बनेगी। महात्मा बुद्ध इस मसले पर खामोश रहे, He was silent on the subejct मगर महायान मंत्र बताता है कि वह परमात्मा को मानते थे। He was a believers in God, ओम मणि पदमे हू। हां तो उस के बाद नास्तिक से कहने लगे सच बोलना अच्छा है कि नहीं ? रहम करना अच्छा है कि नहीं ? किसी को दुख न देना अच्छा है कि नहीं ? वह बोला, हां है। कहने लगे तुम यह करोगे तो हृदय साफ होगा और आगे मामला चलेगा। तो मेरे कहने का मतलब यह है कि जैसा वक्त और समय होता है वैसा ही उपदेश होता है।

इस के बाद मुसलमान भाइयों का जो उपदेश आता है कि आत्मा में वे सब

ताकतें हैं जो परमात्मा में हैं मगर छोटे पैमाने पर miniature scale पर हैं। अगर यह मन इंद्रियों के घाट से ऊपर आ जाये, उन से आज़ाद हो जाये तो उसी में वह (परमात्ज़ा) बोलता है। There is a possibility, यह इमकान मौजूद है। जो चीज़ innate (ज़ातियत में शामिल) न हो वह मिल कैसे सकती है ? तो मुसलमान फकीरों की किताबें भी बहुत हैं। हज़रत मोहज़्मद साहब भी हुए, मौलाना रूम साहब भी हुए, शज़्स तबरेज़ साहब, ज़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती साहब वगैरा हुए। उन की बाणियां पढ़ो, वही तालीम है जो संतों की है। पराविद्या सब की एक है realisation (असलियत) में जा कर, details (विस्तार) में कुछ न कुछ इज़्तलाफ होता है कुछ रस्म रिवाज के सबब से या आबो हवा के लिहाज़ से मगर मज़्सद एक है, purpose is the same. सिख गुरद्वारों में जाओ वहां नंगे सिर जाना पाप है। ईसाइयों के गिरजों में जाओ तो वहां सिर ढांप के बैठना पाप है। दोनों यह चाहते हैं कि जब भी प्रभु की याद में बैठो बा अदब हो कर बैठो। अरे भई उन की रस्म रिवाज अलहदा-अलहदा हैं। इस लिए फर्क़ है, बात तो वही है। तो महापुरुष objective side को, रस्मो रिवाज को नहीं छेड़ते। वह कहते हैं आगे ही बहुत समाज बने पड़े हैं। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि बहुत सारे कुंएं लगे हैं, और कुआं लगाने की ज़्या ज़रूरत है ? इसी से पानी निकालो। तब तो बात है कि उन में truth (सच्चाई) न हो। कबीर साहब ने फरमाया:-

वेद कतेब कहो मत झूठे
झूठा सो, जो न विचारे॥

किसी आमिल पुरुष के चरणों में बैठो self analysis का मज़मून है। Divinity is in you. You are divine in nature हकीकत तुम में है मगर तुम मन इंद्रियों के घाट पर ज़लीलो ज़्वार हो रहो हो। किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठोगे तो वह पहले ही दिन first day आपको बतायेगा how to rise above body consciousness, कि जिस्म से ऊपर कैसे आ सकते हैं ?

इस के बाद और महात्माओं ने बताया। अरिविंद घोष के मुतल्लक जो बताया वह ज्यादातर उन की ज़िंदगी के बारे में बयान किया। हमें खुशी है कि जो तालीम उन्होंने दी, एक दफा अखबार में ज़िक्र आया था उस का, मैंने पढ़ा था। श्री अरविंद घोष ने बयान किया कि मैं अब एक ऐसी मंज़िल पर जा रहा हूं जिस के मुतल्लक वेदों को भी खबर नहीं है। यह इशारा दिया उन्होंने। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह है कि degrees हैं development की जितनी जितनी जिस की रसाई हुई।

जब से दुनिया बनी है महापुरुष आते रहे। जिस हकीकत को उन्होंने पाया उसे खोल खोल कर समझाया और practical experience (अनुभव) दिया उन लोगों को जो उन से मिले और उन के fine records धर्म पुस्तकों की शकल में हमारे पास मौजूद हैं। We have respect for them all, हमारे दिलों में महापुरुषों के लिए इज़्ज़त है ज़्योंकि वे नूर के बच्चे हैं, They are all children light.

मैं अमेरिका गया तो वहां लोग कहने लगे Christ is the greatest of them all, क्राईस्ट (मसीह) सब से बड़ा है। मैंने कहा कि तुज़्हारे पास ज़्या सबूत है इस बात का ? What is the proof with you? कहने लगे उस ने कहा था कि मैं खुदा का बेटा हूं, I am the son of God. मैंने कहा ठीक है मगर यही वचन कोई और महापुरुष कह दे तो ? मैंने उन्हें quotations (हवाले) दिए गुरु अर्जुन साहब के, दशम गुरु साहब के, और महात्माओं के। गुरु अर्जुन साहब ने कहा:-

पिता पूत एके रंग लीने॥
और **पिता पूत रल कीनी सांझ॥**

और दशम गुरु साहब की बाणी है:-

मैं सुत तोहे निवाजा

कि जा भई मैं तुझे पुत्र थापता हूं। यह हवाले देकर मैंने उन से पूछा How would you take it now? मैंने उन से कहा कि बात यह है, you are not aware

of the scriptures of others, कि आप लोग दूसरों को धर्म पुस्तकों से वाकिफ नहीं हैं और moreover क्राईस्ट(मसीह) की तालीम भी practical (अनुभव की) ही थी, To rise above the body consciousness (शरीर के ऊपर से आना) उन्होंने (मसीह ने) कहा Learn to die so that you may begin to live. फिर एक और जगह कहा मसीह ने Whosoever shall lose this life shall save it and whosoever shall save this life shall lose it, कि जिस्म जिस्मानियत की ज़िंदगी को जब छोड़ दोगे तभी आप हमेशा की ज़िंदगी को पा सकते हैं। अगर इसी ज़िंदगी से (जिस्म जिस्मानियत की ज़िंदगी से) जकड़े रहोगे तो तुम हमेशा की ज़िंदगी को नहीं पा सकते।

सो तालीम सब महात्माओं की वही है, ज़बांदानी अपनी अपनी है। फिर मैंने उन को एक talk (प्रवचन) देते हुए कहा कि तुम क्राईस्ट की तालीम को उस वक्त तक नहीं समझ सकोगे जब तक eastern eye (पूर्वीय की नज़र) के ज़रिये न देखो। कहने लगे Why? (यह ज़्यों) ? मैंने कहा Because Christ was an eastern (ज़्योंकि यशु एक पूर्वीय था)। वह dumb founded, भौंचक्का रह गये, जवाब कोई नहीं। वाकई था वह eastern और parallel thoughts मिलते हैं। उस ने (मसीह ने) भी कहा If thine eyes be single thy whole being shall be full of light और फिर कहा Except ye be born anew ye cannot enter the kingdom of God. इंग्लैंड में talk हुई। मैंने उन को कहा You cannot pray God with hands. God does not reside in the temples made by the hands of men. एक बिशप थे, उठे, कहने लगे with one word of yours you have thrown atom bomb on all our churches. उस को initiation (नाम) मिला। सो मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह है कि truth is one. अनुभवी पुरुषों ने जितना जितना realise (अनुभव) किया वह hand down (पेश) करते गये धर्म पुस्तकों की शकल में। अब भी यह practical (अनुभव का) मज़मून है। जब तक अनुभवी पुरुष न मिले इस का अनुभव नहीं मिलता। अपने आप कोई कर सकता है तो बेशक करे। मुझे शिमला में एक भाई मिले। कहने लगे आप हमें साधन बताओ, हम अपने आप कर लेंगे। मैंने कहा बहुत अच्छा भई। मैंने तुलसी साहब की बाणी दे दी। उस में लिखा था:-

पुतली में तिल तिल में भरा राज़े कुल का कुल,
इस पर्दाए-स्याह के ज़रा पार देखना।

आंखों के पीछे जो सियाही (अंधेरा) है उस में penetrate करो, उस के पार जाओ। कहने लगे अगर हम अपने आप कर लें तो? मैंने कहा फिर और ज़्या चाहिए? अंधे को दो आंखें चाहिएं। करो, न कर सको तो जाओ किसी आमिल के पास। सवाल यह है How to rise above body consciousness, जिस्म से ऊपर कैसे आयें? बात यह है। जो आगे ही इंद्रियों के घाट का रूप बना बैठा है और साधन वह करता है जिन का ताल्लुक इंद्रियों के घाट से है फिर इंद्रियों के घाट से कैसे ऊपर जा सकते हैं? Common sense (साधारण बुद्धि) की बात है। अगर कोई भाई जा सकता है तो let him try and see, let him sit at the feet of somebody. गुरु नानक साहब ने फरमाया:-

तू सुण मन भूले बावरे गुर की चरणी लाग॥

बड़े साफ लफ़्ज़ थे और यह कहा कि महाराज नाम की आपने बड़ी महिमा की है, नाम कहां मिलता है? फरमाया:-

जहां नाम मिले तहां जाओ॥

नाम तुज़्हारे अंतर है। इस में ज्योति है और प्रणव की ध्वनि हो रही है। जहां से वह नाम मिलता है ले लो। फिर कहा :-

गुर प्रसादी कर्म कमाओ॥

किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से यह कर्म कमा सकते हो। तो एक ऐसी truth हकीकत है जो सब महापुरुषों ने पेश की है। मुखतलिफ महापुरुषों की बाणियां पढ़ने का मुझे शुरु से शौक रहा। पहले बात समझ नहीं आती थी। जब हजूर के चरणों में आये बात समझ में आई अरे भई यह possibility (संभावना) कि जिस्म से ऊपर आ सकते हैं, जीते जी जिस्म से ऊपर कैसे जा सकते हैं? मर तो नहीं जायेंगे? अरे भई मरना भी नहीं ऊपर भी आना है, अंतर की आंख भी खुलती है, उस की ज्योति मार्ग में भी चलता है, श्रुति मार्ग से चल कर कहां पहुंचता है? That is the way back to God, जहां से वह आ रही है, Absolute God में, अनाम और अशज़्द में वह पहुंच जाता है। यह संतों की तालीम है, हर एक महापुरुष ने यह तालीम दी। जब तक कोई आमिल पुरुष न मिले यह तालीम एक सरबस्ता राज़ (छुपी) है और राज़ रहेगी। कबीर साहब father of spirituality (रूहानियत के पिता) समझे जाते थे। गुरु नानक साहब और कबीर साहब का आपस में मेल जोल हमारी तारीख (इतिहास) बताती है। गुरु नानक साहब के बाद दस गुरु साहब चले आये। दशम गुरु साहब का बाजीराव होलकर खानदान में आना जाना था। शाम राव होलकर तुलसी साहब बने, link रहा न? तुलसी साहब बने, तुलसी साहब से स्वामी जी महाराज का आपस में संबंध था। वह (तुलसी साहब) उन (स्वामी जी) को मुंशी जी कहते थे। ये source higher होते हैं, developed होते हैं, बने बनाये आते हैं, मगर शराबी का प्यार शराबी ही से होगा न, अनुभवी पुरुष का प्यार अनुभवी पुरुष से होगा। सो तुलसी साहब के बाद स्वामी जी महाराज ने इस तालीम को जो छिप रही थी, गुप्त हो रही थी उस को ताज़ा किया। एक एक मज़मून को खोल खोल कर समझाया है। पहले उन्होंने तालीम गुरु ग्रंथ साहब से ही दी। स्वामी जी महाराज आप कहते हैं गुरबाणी पेखो, तुलसी साहब का, सब का ज़िक्र किया है उन्होंने। कहते हैं मैं वही बात कह रहा हूं जो सब ने बयान की है। सो इस के बाद सिलसिला चला, कुछ दयाल बाग में, कुछ इधर स्वामी बाग में। स्वामी जी महाराज आप पांच नाम का सिमरण दिया करते थे। तो गुरु भक्त हमेशा ही गुरु, प्रभु ही का रूप होता है। स्वामी स्वामी सारे महापुरुष उस का नाम लेते हैं, उस हकीकत का नाम राधास्वामी कर के ज़्यान किया जो हर एक के लिए एक हव्वा बन रहा है। शुरु शुरु में मैं जब गया तो कहने लगे यह लज़्ज ज़्या है? मैंने कहा यह परमात्मा के दरवाज़े पर एक हव्वा रखा है कि कोई अंदर न दाखिल होने पाये।

अरे भई उस परमात्मा के अनेकों नाम महापुरुषों ने रखे, दशम गुरु साहब ने हज़ारों नाम रखे। एक और महापुरुष आया, उस ने एक और नाम रख दिया। भई हमारे मन में सब नामों के लिए इज़्ज़त है। आखिर यह अक्षरी नाम हैं उस हकीकत का बोध कराने के लिए जो सब से highest (ऊंची) है, इस से चलना है, चलो जो गुरु नाम दे दे उस की कमाई करो:-

गुर बचनी हर नाम उचरो॥

यह ज़्यान मैंने ज़्यों कहा? हमारी गर्ज़ तो हकीकत से है पानी से। अगर तुज़्हें पानी 'माओ' कर के मंजूर है तो 'माओ' कर के ले लो, अगर आप को जल कर के मंजूर है तो जल कर के ले लो मगर पियो पानी ज़रूर। जब तक नहीं पियोगे, शांति नहीं आयेगी। It is the water of life. It is the bread of life (यह जीवन का पानी है और जीवन की रोटी है)। इस के पीने के बगैर प्यास नहीं बुझेगी, इस के खाने के बगैर भूख नहीं जायेगी। उपनिषद जो कहता है, वह ज़्या चीज़ है जिस के पाने से सब कुछ पाया हुआ सा हो जाता है। वह ज़्या चीज़ है? वह यही चीज़ है। क्राईस्ट को एक spartan lady मिली। प्यास लगी हुई थी उन्हें। कहने लगे पानी पिला दो। वह छोटी ज़ात की थी, उन में inferiority complex होता है न, वह झिझकी तो खुद ही आगे बढ़ कर पानी पी लिया। कहने लगे तूने मुझे पानी पिलाया है, तुम मेरे पास आओ मैं तुज़्हें ज़िंदगी का पानी दूंगा।

तो महापुरुषों के पास यह ज़िंदगी का पानी है जिस को हम नाम कहते हैं, शज़्द कहते हैं, अमृत कहते हैं, महारस कहते हैं, कलमा भी कहते हैं। सब के घट घट में

है वह मगर इंद्रियों के घाट से ऊपर आ कर उस का contact (संपर्क) मिलता है। यह है digest (निचोड़) थोड़े लफ़्ज़ों में सब महापुरुषों की तालीम का और हर एक महापुरुष ने इस का ज़िक्र किया है। गीता में पढ़िए, वहां छठे और सातवें अध्याय में ज़्या ज़िक्र किया है? कि अंतर में देवयान नूर के मार्ग में रूह घिर सी जाती है। There is no way out. वहां श्रुति मार्ग काम करता है, मददगार होता है और फिर कदम दर कदम किसी ऐसे अनुभवी पुरुष की ज़रूरत है जो तुझ़ें वहां भी गाइड करे और यहां भी गाइड करे। पहांड़ों, जंगलों, बियाबानों में जाओ, वहां भी करे और जब आप जीते जी या मर कर जिस्म छोड़ कर ऊपर रूहानी मंडलों में जाओ तो वहां भी मदद करे।

बा तो बाशद अज़ मकानो लामकां।
चूं बिमानी अज़ सराओ अज़ मकां॥

जो तुझ़हारे साथ रहे इस दुनिया में और इस दुनिया को छोड़ कर मर के या अब जाओ फिर भी तुझ़हारे साथ रहे। जिस में यह समर्था है उस का नाम साधु, संत और महात्मा है।

यह (महात्मा) हमेशा रहते हैं supply and demand का नियम अटल है, हमेशा से रहा और हमेशा से है। महापुरुषों की तालीम पर live up (अमल) करो। मैंने जब Unesco Conference में यहां talk दी थी उस में भी यही कहा था। धर्म पुस्तकें सब ठीक कहती हैं। हमें यह learn करना है, सीखना है कि how to live upto them. जितना जितना हम उसे (धर्म पुस्तकों के उपदेश को) अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनायेंगे उतना हम शांति को पा जायेंगे। तो यह है तालीम जो आप के सामने रखी गई है।

****